"राष्ट्रीय शिक्षा दिवस"

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के अवसर पर शिक्षा विद्याशाखा के तत्वाधान में दिनांक 11.11. 2022 को पूर्वाह्न 11.30 बजे से 01.30 बजे तक विश्वविद्यालय के तिलक शास्त्रार्थ सभागार में विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्रो0 पी0के0 साहू, पूर्व कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता मा0 कुलपति, प्रो0 सीमा सिंह जी द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता, माननीय कुलपति जी और सभागार में बैठे अन्य सदस्यों का वाचिक स्वागत प्रो0 पी0 के0 स्टालिन, निदेशक, शिक्षा विद्याशाखा, उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज द्वारा किया गया। कार्यक्रम का विषय प्रर्वतन श्री परविन्द कुमार वर्मा जी द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो0 पी0 के0 साहू जी ने शिक्षा दिवस के अवसर पर "मौलाना अबुल कलाम आजाद" को नमन करते हुए उनके जीवन के बारे में प्रकाश डाला। साथ ही उनके मुख्य वक्तव्य में आजाद जी के धर्म निरपेक्ष विचारधारा के साथ उनके स्वतन्त्रता संग्राम से लेकर देश के स्वातन्त्रय काल तक शिक्षा में दिये गये योगदान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शिक्षार्थी के स्वायत्तता, स्वतन्त्रता को मुक्त विश्वविद्यालय के उदद्श्यों से जोड़ते हुए शिक्षक के दायित्यों के बारे में भी बताया। साथ ही उन्होंने बताया की निजता एवं भाषा की स्वतन्त्रता यदि विद्यार्थी में नहीं है तो उसके स्व का क्षय हो जाता हैं। इसी क्रम में मानवतावादी दृष्टिकोण को अपनाने के लिए कहा। साथ ही शिक्षार्थी के स्वालम्बता की बात कही।

मुख्य वक्ता ने कहा कि मुक्त विश्वविद्यालय की मूलभूत अवधारणा मुक्तता, स्वायत्तता, उनमुक्तता, एक वह्द रुप में होता है। मुक्त विश्वविद्यालय की बहुविधायें है। किसी एक मानक को लेकर नहीं चल सकते हैं। संरचनात्मक उपागम के अवधारणा को एक व्यक्ति के आधार पर बहुलता एवं विभिन्नता को स्वायतता के करीब बताया। विद्यार्थी की समस्या को हल न करके उसे हल करने योग्य बनाना एक शिक्षक का दायित्व बताया जिसके लिए उसे नये नये विद्याओं को सिखते रहना चाहिए।

कार्यक्रम अध्यक्षीय उद्बोधन में विश्वविद्यालय की माननीय कुलपति, प्रो0 सीमा सिंह जी ने मौलाना अबुल कलाम आजाद को नमन करते हुए कहा कि शिक्षा में हम अपने मुक्त विश्वविद्यालय के माध्यम से प्रदान की जाने वाली शिक्षा पर कक्षा कक्ष शिक्षण न होने के कारण हम शिक्षक शिक्षार्थी के संवेदनाओं को समझने से वंचित रह जाते हैं। जोकि एक प्रकार से मुक्त विश्वविद्यालय की सीमाऐं है। समाज में जीने के लिए शिक्षा हमें बहूत कुछ देती है। जिसमें मानसिक, भावनात्मक, शारीरिक एवं सामाजिक, अध्यात्मिक शक्तियां प्रदान करती है। साथ ही कहा की मुक्त विश्वविद्यालय के माध्यम से 18 वर्ष से लेकर जीवन पर्यन्त तक शिक्षार्थी शिक्षा ग्रहण कर सकता है।

कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन प्रो0 पी0 के0 पाण्डेय द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 संजय कुमार सिंह, सहायक आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा द्वारा किया।